बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्षः 24 ● अंकः 78 ● नई दिल्ली ● शुक्रवार 02 जनवरी 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्यः 3 रूपया ● पृष्ठः 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

जेएसडब्ल्यू एमजी की बिक्री 19 प्रतिशत बढ़कर 70,554 इकाई हुई

नई दिल्ली, । एक जनवरी जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया की वित्तीय वर्ष 2025 में बिक्री सालाना आधार पर 19 बढ़कर 70,554 इकाई रही। मोटर वाहन विनिर्माता कंपनी ने बयान में कहा कि दिसंबर 2025 में उसकी थोक बिक्री 6500 इकाई रही जो इसके आंतरिक दहन इंजन (आईसीई) और इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) खंड में निरंतर मांग को दर्शाता है। कंपनी के अनुसार एमजी सेलेक्ट की थोक बिक्री मासिक आधार पर 38 प्रतिशत बढ़ी। वहीं इलेक्ट्रिक वाहनों की कुल बिक्री एक लाख इकाइयों का आंकड़ा पार कर गई।

नव वर्ष 2026-राष्ट्रपति से पीएम मोदी तक नेताओं ने दी शुभकामनाएं, लोकतंत्र-पर्यावरण और सामाजिक न्याय पर दिया जोर

नई दिल्ली, । देशभर में नव वर्ष 2026 का स्वागत उल्लास, उम्मीद और सकारात्मक संकल्पों के साथ किया गया। लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएं देकर नए साल की

शुरुआत कर रहे हैं। इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे समेत कई नेताओं ने सोशल मीडिया के माध्यम से देशवासियों को नए साल की शुभकामनाएं दीं। नेताओं के संदेशों में खुशहाली, पर्यावरण संरक्षण, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और प्रगति की भावना प्रमुख रही।

राष्ट्रपति का पर्यावरण और आत्मचिंतन पर जोर

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नव वर्ष 2026 के मौके पर देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि, नया साल आत्मचिंतन, सकारात्मक बदलाव और नए संकल्पों का अवसर है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करने की अपील की और नागरिकों से प्रकृति के संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया। राष्ट्रपति ने कहा कि, सामूहिक प्रयासों से ही सतत विकास और बेहतर भविष्य का निर्माण संभव है।

राहुल गांधी का संदेश

लोकसभा में नेता विपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि नया साल सभी के जीवन में खुशियां, अच्छा स्वास्थ्य

और सफलता लेकर आए। उन्होंने देशवासियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मल्लिकार्जुन खड़गे का आह्वान

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने नव वर्ष 2026 के अवसर पर देशवासियों के नाम संदेश जारी किया। उन्होंने कहा कि नया साल कमजोर वर्गों के अधिकारों- काम का अधिकार, वोट का अधिकार और गरिमापूर्ण जीवन के अधिकार की रक्षा के लिए जन आंदोलन बने।

खड़गे ने युवाओं के लिए रोजगार, महिलाओं की सुरक्षा, किसानों की समृद्धि और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों को सम्मान दिलाने को देश का साझा संकल्प बताया।

अखिलेश यादव का संदेश

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपने नव वर्ष संदेश में मानवता, प्रेम और

सामाजिक न्याय पर जोर दिया। उन्होंने नए साल को उन सभी -पीडीए प्रहरी- को समर्पित किया, जो लोकतंत्र और संविधान प्रदत्त अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अखिलेश यादव ने समानता, सम्मान और सौहार्द को मजबूत करने के संकल्प के साथ देशवासियों को शुभकामनाएं दीं।

मोदी ने देशवासियों को दीं नव वर्ष 2026 की शुभकामनाएं

नई दिल्ली , । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार

को नव वर्ष 2026 के आगमन पर देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने अपने सोशल मीडिया एक्स मंच पर शुभकामना संदेश पोस्ट किया, «सभी को 2026 की हार्दिक शुभकामनाएं। यह वर्ष सभी के लिए उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि लेकर आए, आपके प्रयासों में सफलता मिले और आप जो भी करें उसमें संतोष प्राप्त हो। मैं समाज में शांति और खुशहाली के लिए प्रार्थना करता हूं।» अपने नववर्ष संदेश में श्री मोदी ने राष्ट्रीय विकास के लिए एकता और सामूहिक प्रयासों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने विश्वास जताया कि देश आने वाले वर्ष में चुनौतियों पर काबू पाएगा और नई ऊंचाइयों को छुएगा। प्रधानमंत्री का यह संदेश ऐसे समय आया है जब भारत अपनी आर्थिक विकास की गति को आगे बढ़ाने और वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को मजबूत करने की दिशा में अग्रसर है। श्री मोदी ने नागरिकों से एक समृद्ध और सौहार्दपूर्ण समाज के निर्माण के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया।

नववर्ष 2026 भारत को और सशक्त व विकसित बनाने के संकल्प को देगा नई ऊर्जा-उपराष्ट्रपति

नई दिल्ली, । उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने नववर्ष 2026 के अवसर पर देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उम्मीद जताई है कि आने वाला वर्ष भारत को और मजबूत, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने के सामूहिक संकल्प को नई मजबूती प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि नया साल देश के लिए अवसरों, सकारात्मक सोच और रचनात्मक प्रयासों का प्रतीक बने। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर साझा अपने संदेश में उपराष्ट्रपति ने देश और दुनिया के लिए शांति, उत्तम स्वास्थ्य, खुशहाली और समृद्धि की कामना की। उन्होंने लिखा कि नववर्ष 2026 सभी नागरिकों के जीवन में सुख, संतुलन और स्थायित्व लेकर आए तथा समाज के हर वर्ग तक विकास की रोशनी पहुंचे। उपराष्ट्रपति ने इस बात पर जोर दिया कि भारत आज एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकाल से गुजर रहा है, जहां आर्थिक प्रगति, तकनीकी नवाचार और सामाजिक समरसता एक साथ आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे में नया साल नागरिकों के सामूहिक प्रयासों, अनुशासन और कर्तव्यबोध के जरिए देश को और अधिक सशक्त बनाने का अवसर लेकर आया है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का लक्ष्य तभी साकार होगा, जब हर नागरिक राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाए।

बिरला ने दी देशवासियों को नव वर्ष की बधाई

नई दिल्ली, । लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने

देशवासियों को नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह साल आपके जीवन में नया संकल्प, नई ऊर्जा और आत्मविश्वास लेकर आये। श्री बिरला ने नव वर्ष की बधाई संदेश में कहा कि नव वर्ष आपके जीवन में नया संकल्प, नई ऊर्जा, नये आत्मविश्वास के साथ जीवन में खुशियां लेकर आये। हम सामूहिक मिलकर देश और प्रदेश को नये विकास के आयाम पर पहुंचाने में, सामाजिक जनकल्याण में और किस तरीके से हमारे योगदान से देश और प्रदेश को बढ़ाने में मदद मिल सके इसके लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि नया वर्ष हम सबके लिए तारीख बदलने का नहीं है। नया वर्ष हम सब के जीवन में नई ऊर्जा, नये उत्साह के संकल्प का दिन है। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में भी नये संकल्प के साथ जीवन की शुरुआत करें ताकि हमने जीवन में जो लक्ष्य तय किये हैं उन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। हमेशा जीवन में आत्मविश्वास, उत्साह, उमंग बना रहे। हर चुनौतियों, हर संकट, हर आपदा के अन्दर भी अवसर को तलाशने का प्रयास करें। जब भी जीवन में आपदा, संकट और चुनौतियां आये तब कुछ देर संयमित रहकर उससे निपटने का प्रयास करना चाहिए। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि मुझे आशा है नव वर्ष में नये संकल्प और नई ऊर्जा के साथ नई उत्साह और उमंग के लेकर आये। आपका जीवन खुशहाल और समृद्ध हो।

नववर्ष के पहले कार्य दिवस पर डीयू कुलपति ने शुभकामनाओं के साथ गिनाई उपलब्धियां

नई दिल्ली, नववर्ष के पहले कार्य दिवस के अवसर पर गुरुवार को दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) में संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने नववर्ष की शुभकामनाएं देने के साथ-साथ बीते वर्ष में डीयू की उपलब्धियां भी गिनवाई। कुलपति ने कहा कि आज का दिन हमारे पास 365 खाली पृष्ठों वाली एक पुस्तक और हाथ में एक पेन के साथ आया है, इसे उपलब्धियों से भरना है।

प्रो. योगेश सिंह ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्ष 2025 में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में डीयू ने अच्छी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। उन्होंने कहा कि अच्छी रैंकिंग टैलेंट, फंडिंग, पार्टनरशिप और रिसोर्स को खींचती है, जिससे ब्रांड की अच्छी रेप्युटेशन और ग्लोबल विजिबिलिटी होती है। यह इंस्टीट्यूशनल क्वालिटी, रेप्यूटेशन और परफॉर्मेंस का संकेत है जो भावी विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयों की तुलना करने, एकेडमिक एक्सीलेंस, रिसर्च आउटपुट और संभावित करियर मौकों पर फैसले लेने में मदद के लिए एक भरोसेमंद सोर्स के तौर पर काम करते हैं। प्रो. योगेश सिंह ने बताया

कि क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में डीयू ने अपना मजबूत वैश्विक स्थान बनाए रखा है। एम्प्लॉयमेंट आउटकम में पिछले साल के मुकाबले डीयू 14 स्थान ऊपर चढ़कर दुनिया में 30वें स्थान पर पहुंच गया है। वैश्विक रैंकिंग में डीयू का रैंक 328 रहा है। ओवरआल स्कोर में डीयू 2025 के 33.8 से बढ़कर 2026 में 42.6 तक पहुंच गया है।

एनआईआरएफ रैंकिंग पर बात करते हुए कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय श्रेणी में, डीयू इस बार छठे से पांचवें स्थान पर पहुंच गया, जबकि शोध संस्थान श्रेणी में यह 14वें से 12वें स्थान पर पहुंच गया, जहां केवल आईआईटी और समर्पित शोध संस्थान ही डीयू से ऊपर रैंक कर पाए। एनआईआरएफ रैंकिंग में अच्छा प्रदर्शन करने वाले कालेजों को कुलपति द्वारा इस कार्यक्रम के दौरान सम्मानित भी किया गया।

कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय के लिये वर्ष 2025 काफी अच्छा रहा है और 2026 भी काफी अच्छा रहने वाला है। नए वर्ष में डीयू को वीर सावरकर कालेज मिल जाएगा। कई अकादमिक भवन तैयार हो जाएंगे। प्रत्येक स्थान पर सीसीटीवी कैमरा चालू होंगे। हॉस्टल और हेल्थ सेंटर की इमारतें भी तैयार हो जाएंगी।

कुलपति ने बताया कि दो हजार करोड़ रुपये से अधिक के निर्माण कार्य प्रगति पर हैं जिनमें से अधिकतर 2026 में पूर्ण हो जाएंगे। उन्होंने बताया कि आईओई की नई बिल्डिंग, आईओई हॉस्टल, कंप्यूटर सैंटर की नई बिल्डिंग और लाईब्रेरी के विस्तार का कार्य जारी है। फैक्लटी ऑफ टैक्नॉलोजी, नए गर्ल्ज हॉस्टल का निर्माण, विश्वविद्यालय के पूर्वी और पश्चिमी कैम्पस का निर्माण चल रहा है। नवीनीकरण के भी अधिकतर कार्य पूर्ण हो चुके है और जो जारी हैं, उनके इस वर्ष में पूर्ण होने की उम्मीद है।

कुलपति ने बताया कि पिछले वर्ष में कुछ नए शैक्षणिक प्रोग्राम शुरू किए गए हैं। उन्होंने कहा कि आगामी वर्षों में भी नए शैक्षणिक प्रोग्राम शुरू होंगे। दिल्ली विश्वविद्यालय में सेंटर फॉर उड़िया स्टडीज बनाने को मंजूरी दे दी गई है। उन्होंने आशा जताई कि केंद्र सरकार से इसके लिए नए वर्ष में ग्रांट और नियुक्तियों की मंजूरी मिल जाएगी। इस अवसर पर डीन ऑफ कॉलेजज प्रो. बलराम पाणी, दक्षिणी परिसर की निदेशक प्रो. रजनी अब्बी, एसओएल की निदेशक प्रो. पायल मागो और रजिस्ट्रार डॉ विकास गुप्ता, कालेजों के प्रिंसिपल्स और फाइनेंस कमेटी के सदस्य व विभिन्न विभागों के अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

डीयू एग्जामिनेशन ब्रांच में विद्यार्थियों और पेपरों की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी

नई दिल्ली, । दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के एग्जामिनेशन विंग में पिछले साल में विद्यार्थियों और पेपरों की संख्या में रिकार्ड बढ़ोतरी हुई है। उसके बावजूद एग्जामिनेशन विंग ने परीक्षाओं का सफल संचालन किया। डीयू के परीक्षा नियंत्रक प्रो. गुरप्रीत सिंह टुटेजा ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि एग्जामिनेशन विंग को अपनी कामयाबियों, खासकर नेशनल एजुकेशन पालिसी (एनईपी) के तहत दिल्ली विश्वविद्यालय के सेमेस्टर एग्जाम सफलतापूर्वक कराने पर गर्व है। स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग समेत लगभग 90 कॉलेजों में 7 लाख से ज्यादा विद्यार्थियों के लिए परीक्षाएं कराई गईं। इनमें 10 हजार से ज्यादा शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी से लगभग 15000 प्रश्न पत्र तैयार किए गए। प्रो. टुटेजा ने बताया कि हाल के वर्षों में दिल्ली विश्वविद्यालय की एग्जामिनेशन ब्रांच के ऑपरेशनल स्केल में काफी बढ़ोतरी हुई है, जो विश्वविद्यालय के बढ़ते एकेडमिक फुटप्रिंट और असेसमेंट सिस्टम की बढ़ती कॉम्प्लेक्सिटी को दिखाता है। अकादमिक वर्ष 2021ू22 से 2025ू26 तक के ऑफिशियल डेटा और हाल के एग्जामिनेशन सेशन स्टूडेंट पार्टिसिपेशन, क्वेश्चन पेपर और सेशनल वर्क लोड में लगातार बढ़ोतरी दिखाते हैं। उन्होंने बताया कि नवंबर-दिसंबर 2025 सत्र के दौरान एक ही सत्र में आयोजित प्रश्न पत्रों की अधिकतम संख्या 941 पर पहुंच गई, जबकि नवंबर-दिसंबर 2024 में यह 228 थी। इसी तरह, एक सत्र में परीक्षा देने वाले छात्रों की अधिकतम संख्या एक वर्ष के भीतर 69,808 से बढ़कर 86,000 हो गई। ये आंकड़े एक ही सत्र में विश्वविद्यालय की परीक्षा प्रणाली द्वारा संभाले गए अब तक के सबसे अधिक कार्यभार को दर्शाते हैं।

दिल्ली-टोक्यो के बीच उड़ानों में हुई सुरक्षा नियमों की अनदेखी, डीजीसीए ने पायलटों को भेजा नोटिस

नई दिल्ली, । भारत के विमानन नियामक ने सुरक्षा और नियमों से जुड़ी समस्याओं की जानकारी होने के बावजूद दिल्ली और टोक्यो के बीच कई उड़ानें संचालित करने के लिए एयर इंडिया के कॉकपिट क्रू (पायलटों) को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। नियामक ने दो हफ्तों के अंदर उससे जवाब मांगा है।

यह नोटिस नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की ओर से जारी किया गया है और यह दिल्ली से टोक्यो जाने वाली फ्लाइट एआई-357 और टोक्यो से दिल्ली आने वाली फ्लाइट एआई-358 के संचालन से संबंधित है।

डीजीसीए के नोटिस के अनुसार, विमान के लिए लागू मिनिमम इक्विपमेंट लिस्ट (एमईएल) सही नहीं पाई गई यानी जरूरी तकनीकी मानकों में कमी थी।

एयर इंडिया की ओर से इस नोटिस पर अभी तक कोई जवाब नहीं दिया गया है।

नोटिस में यह भी कहा गया है कि यह कोई एक बार की घटना नहीं है, बल्कि पहले भी अन्य उड़ानों में ऐसी समस्याएं पाई गई हैं।

डीजीसीए ने पायलटों से यह भी पूछा है कि एयरक्राफ्ट नियमों

और नागरिक विमानन आवश्यकताओं (सीएआर) के तहत उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों न की जाए?

विमानन नियामक ने यह नोटिस इसलिए भी जारी किया, क्योंकि एयर इंडिया ने बार-बार तकनीकी खराबियों के बावजूद बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान का संचालन किया।

पिछले महीने, दिल्ली से मुंबई जा रही एयर इंडिया की उड़ान में टेक ऑफ के बाद इंजन बंद होने की घटना सामने आई थी, जिसके बाद डीजीसीए ने कहा था कि वह इस मामले की जांच करेगा। यह बी777-300ईआर विमान तकनीकी समस्या के कारण उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही दिल्ली वापस लौट आया था और सुरक्षित रूप से उतर गया।

डीजीसीए ने बताया कि टेकऑफ के बाद जब फ्लैप बंद किए जा रहे थे, तब पायलटों ने दूसरे इंजन (दाएं इंजन) में इंजन ऑयल प्रेशर कम पाया।

टेक ऑफ के थोड़ी देर बाद इंजन का ऑयल प्रेशर शून्य हो गया, जिसके बाद नियमों के अनुसार पायलटों ने उस इंजन को बंद किया और विमान को सुरक्षित रूप से दिल्ली में उतार लिया गया।डीजीसीए ने कहा कि इस मामले में जांच और सुधार का काम जारी है। नियामक ने यह भी बताया कि इस घटना की जांच एयरलाइन की स्थायी जांच समिति द्वारा की जाएगी, जो डीजीसीए के डायरेक्टर एयर सेफ्टी (एनआर) की निगरानी में काम करेगी।

बांग्लादेश में 2026 के चुनावों के नतीजों पर निर्भर है क्षेत्रीय सुरक्षा

-आशीष विश्वास-

घरेलू राजनीति में भी, भारत अपनी संघर्षरत अर्थव्यवस्था, बढ़ती बेरोजगारी और अमीर-गरीब के बीच चिंताजनक खाई जैसी गंभीर समस्याओं के बावजूद, सामाजिक विकास के मामले में पाकिस्तान या बांग्लादेश दोनों से बेहतर स्थिति में दिखता है। दिल्ली के विपरीत, इस्लामाबाद आने वाले सालों में बीजिंग और वाशिंगटन पर निर्भर रहेगा।

दक्षिण एशियाई संदर्भ में, बांग्लादेश में हिंसक सत्ता परिवर्तन, भारत और पाकिस्तान के बीच एक संक्षिप्त टकराव और पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच छिटपुट झड़पों के बाद, चारों देशों के बीच राजनयिक बातचीत में एक उल्लेखनीय कड़वाहट आई है। क्षेत्र में धीरे-धीरे एक नया राजनीतिक गठबंधन उभर रहा है, जिसकी रूपरेखा बांग्लादेश के आम चुनावों के बाद और स्पष्ट होगी।

यह देखना बाकी है कि 2026 में बांग्लादेश में एक नई, चुनी हुई सरकार द्वारा सत्ता संभालने से दक्षिण एशिया में स्थायी राजनीतिक स्थिरता और लोकतांत्रिक ताकतों का एकीकरण होगा या नहीं। बहुत कुछ उभरते हुए पाक-अफगान संघर्ष के समाधान और पाकिस्तान के भीतर बलूच स्वतंत्रता संघर्ष पर निर्भर करेगा।

चूंकि उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान-मध्य एशिया क्षेत्र लंबे समय से ऐतिहासिक संघर्ष और कई युद्धरत जनजातियों और प्रमुख विदेशी शक्तियों से जुड़े सत्ता संघर्षों का मलबा रहा है, इसलिए भविष्य की शांति या स्थिरता के बारे में किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचने में जल्दबाजी करना उचित नहीं हो सकता है। जहां तक भारत का सवाल है, भारत और पाकिस्तान के बीच हालिया विवाद एक अधूरा मामला बना हुआ है।

इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, भारत और बांग्लादेश के बीच मानवाधिकारों के उल्लंघन के अपने-अपने खराब रिकॉर्ड के बारे में बयानों का मौजूदा कड़वा आदान-प्रदान जारी रहने की उम्मीद की जा सकती है। द्विपक्षीय भारत-बांग्ला संबंधों को प्रभावित करने वाले तनावों की अधिक जिम्मेदारी बांग्लादेश की है। इसके नए गैर-निर्वाचित शासक वर्ग ने, जो स्पष्ट रूप से एक अंतरिम प्राधिकरण के रूप में अपनी सीमाओं से अनजान है, यहां तक कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के अलगाव को बढ़ावा देने के लिए चीन में एक भड़काऊ अभियान भी शुरू किया।

चूंकि इस मामले पर चीन की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई,

और न ही भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों ने खुद कोई दिलचस्पी दिखाई, इसलिए, बांग्लादेश के अपेक्षाकृत मोटी चमड़ी वाले अस्थायी नेता भी चुप हो गए हैं।

यूनुस के नेतृत्व वाली सरकार की चीन को भारत के खिलाफ इस्तेमाल करने की घोर राजनयिक विफलता के कारण बांग्लादेश के भीतर ही स्थापित राजनीतिक दलों से उपहासपूर्ण टिप्पणियां हुईं। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के वरिष्ठ नेताओं ने एक प्रेस बयान में डॉ. यूनुस को याद दिलाया कि कुछ अलिखित परंपराएं और दिशानिर्देश हैं जिनका किसी भी सरकार-से-सरकार बातचीत में किसी भी पक्ष द्वारा उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा नहीं है कि इस सार्वजनिक फटकार से डॉ. यूनुस के काम करने के तरीके में कोई खास फर्क पड़ा हो।

जैसे ही नया साल शुरू हो रहा है, इस क्षेत्र के बड़े देश खुद को एक गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल से प्रभावित पाते हैं, जो मौजूदा क्षेत्रीय नेताओं में सामूहिक समझदारी की कमी के कारण, भविष्य की पीढ़ियों को शांति और व्यवस्था की तलाश में सालों तक उलझाए रख सकती है।

भारत, जो खुद को अपने पूर्व और पश्चिम में तीन दुश्मन पड़ोसियों से निपटने के लिए संघर्ष करता हुआ पा रहा है। चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध पहले की तरह ही तनावपूर्ण बने हुए हैं। अब बांग्लादेश भी उनके साथ शामिल होने को उत्सुक दिख रहा है। बहुत कम पर्यवेक्षक बांग्लादेश द्वारा घोषित विदेश संबंधों पर आधिकारिक रुख को मानते हैं कि यह दक्षिण एशिया और उससे आगे अपने राजनयिक पहुंच का विस्तार करने की कोशिश करेगा, विदेश नीति के मामलों में अपनी पिछली भारत-केंद्रित नीति को उलट देगा। भारत के लिए बहुत अधिक सकारात्मक तत्व नहीं हैं जिनकी वह उम्मीद कर सकता है, सिवाय चीन के साथ तनाव में थोड़ी ढील की संभावना के, जो ब्रिक्स फोरम में उनकी सदस्यता के कारण है। साथ ही, अगर आम चुनावों में जमात-ए-इस्लामी और उसके सहयोगी सत्ता हासिल करने में विफल रहते हैं, तो मध्यम अवधि में भारत-बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों में कुछ सुधार की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

हालांकि, भारत ने अपने %निकट पश्चिम% पड़ोस में कूटनीति और प्रभाव के मामले में कुछ फायदे सुनिश्चित किए होंगे। अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ तालिबान सरकार के साथ अच्छे संबंध स्थापित करके, भारत ने बांग्लादेश के साथ अपनी नई दोस्ती में पाकिस्तान को मिलने वाले अधिकांश फायदों को प्रभावी ढंग से बेअसर कर दिया है।

घरेलू राजनीति में भी, भारत अपनी संघर्षरत अर्थव्यवस्था, बढ़ती बेरोजगारी और अमीर-गरीब के बीच चिंताजनक खाई जैसी गंभीर समस्याओं के बावजूद, सामाजिक विकास के मामले में पाकिस्तान या बांग्लादेश दोनों से बेहतर स्थिति में दिखता है। दिल्ली के विपरीत, इस्लामाबाद आने वाले सालों में बीजिंग और वाशिंगटन पर निर्भर रहेगा। इसकी अर्थव्यवस्था बद से बदतर हो गई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक आतंक प्रायोजक के रूप में इसकी छवि पहले की तरह ही नकारात्मक बनी हुई है। वह इसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बड़ी बाधा है।

जहां तक बांग्लादेश की बात है, डॉ. यूनुस ने विभिन्न पश्चिमी वित्तीय बैंकों और संस्थानों से कुछ राहत हासिल करके वित्तीय रूप से कुछ राहत पाई है। लेकिन ढाका को बढ़ती दोहरे अंकों वाली महंगाई को नियंत्रित करना बेहद मुश्किल लग रहा है, जो पहले से ही इस क्षेत्र में सबसे ज्यादा है।

औसत बांग्लादेशी नागरिकों के लिए, बुनियादी चिकित्सा खर्च और बुजुर्गों के लिए जरूरी इलाज की लागत में काफी बढ़ोतरी हुई है। युवा पीढ़ी पर इसका बुरा असर पड़ा है क्योंकि छात्रवृत्ति और अन्य सुविधाएं जो दिल्ली ने बांग्लादेशियों को भारत के जाने-माने संस्थानों में रहने के लिए दी थीं, वे अब पहले जैसी उपलब्ध नहीं होंगी। कोलकाता के अर्थशास्त्री शौनक मुखर्जी के अनुसार, %किसी भी आसान कॉस्ट-बेनिफिट एनालिसिस से पता चलता है कि भारत द्वारा पहले दी गई सुविधाओं को वापस लेने से बांग्लादेश को बहुत ज्यादा नुकसान होगा।%

यहां तक कि रणनीतिक तौर पर भी, बांग्लादेश को अब दो ऐसे पड़ोसी देशों से निपटना होगा जो दुश्मन न सही, लेकिन दोस्त भी नहीं हैं। वे हैं म्यांमार और भारत, जो इसे उत्तर, पश्चिम और दक्षिण दिशा से घेरे हुए हैं। पहले उसे सिर्फ म्यांमार से निपटना पड़ता था। जैसा कि पहले बताया गया है, फरवरी 2026 के चुनावों का नतीजा कई वजहों से पूरे दक्षिण एशिया के लिए महत्वपूर्ण होगा। अभी के लिए, बीएनपी के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत भारत के हितों के लिए ज्यादा फायदेमंद हो सकती है, क्योंकि अब अवामी लीग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अगर, डॉ. यूनुस के राजनीतिक रूप से पर्दे के पीछे से काम करने के साथ जमात समर्थक सरकार चुनी जाती है, तो भारत को अपने पूर्वी हिस्से में मुश्किल समय का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सम्पादकीय...

नयी शुरूआत

नया साल उत्साह भरता है। पर देखे नए साल का भी ~कोई पाइंट ऐसा नहीं होना चाहिए जहां से आप आगे बढ़ सकें। हर चीज में शक पैदा कर दो उसे अस्वीकार्य घोषित कर दो ताकि सिर्फ ढलान ही ढलान बचे। अब कविता बना रहे है कि ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं। हिम्मत होती तो आईटी सेल इसे लिखने वाले के नाम से प्रचारित करता। मगर इनका एक कवि नहीं जिसका नाम हो और उस नाम से कविता एकदम से क्लिक कर जाए। ~तभी दिनकर के नाम को मिलावटी तुकबंदी है। नया साल नए साल जैसा ही होना चाहिए। उम्मीदों का और हौसलों का। 2025 गया। ऐसे ही कुछ और साल भी देश और समाज को पीछे जाते देखते हुए गुजर गए। ! शुरू में, 2014 में इतने बुरे की आशंका किसी को नहीं थी। भाजपा आरएसएस के विचार सबको मालूम थे मगर सिर्फ चुनाव जीतना ही सब कुछ होगा बाकी देश की कोई चिन्ता नहीं होगी यह तो तब शायद ही कोई सोच पाया था। मगर इसके बावजूद अगर हम वापसी की बात कर रहे है तो कोई बहुत अनोखी बात नहीं है। मानव स्वभाव ही बेहतरी की भावना से संचालित होता है। अगर ऐसा नहीं होता तो अंग्रेजों की गुलामी के दौर में देश में आजादी की भावना बलवती नहीं होती। नियति को स्वीकार कर चुका था। 1857 के बाद हुए अंग्रेजों के दमन के जख्म भरे नहीं थे। आजादी की वह पहली लड़ाई लड़ने वालों की पीढ़ी में से कई लोग जिन्दा थे। दिल्ली जहां सबसे ज्यादा दमन हुआ था वहां से लोगों को पलायन करना पड़ा था वह देश के दूसरे हिस्सों में जाकर उस समय अंग्रेजों द्वारा ढाए गए जुल्मों की कहानियां सुनाते थे। उस सबकी दहशत लोगों में बैठी थी। तब 1915 में इसी जनवरी महीने में गांधी दक्षिण अफ्रीका से वापस भारत लौटे थे। और फिर आगे की कहानी सब को मालूम है कि निराश हताश और भय में जी रहे लोगों को गांधी ने कैसे जगाया। तो उम्मीद लोगों का स्वभाव है। डर से निकलना भी चाहता है। डर में दुबक के बैठे रहना सुरक्षा का अहसास देता है। मगर वह वास्तविक सुरक्षा नहीं होती। डर का घेरा और तंग होता जाता है और व्यक्ति और सिमटता जाता है। नया साल उत्साह भरता है। आप देख रहे होंगे कि नए साल का विरोध भी इसीलिए और तेज होता जा रहा है। कोई पाइंट ऐसा नहीं होना चाहिए जहां से आप आगे बढ़ सकें। हर चीज में शक पैदा कर दो उसे अस्वीकार्य घोषित कर दो ताकि सिर्फ ढलान ही ढलान बचे। वह कविता, सस्ती कविता भी बना दी है। ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं। हिम्मत होती तो आईटी सेल इसे लिखने वाले के नाम से प्रचारित करता। मगर अपना कोई कवि तो ऐसा है नहीं जिसका नाम हो जिसके नाम से कविता एकदम से क्लिक कर जाए तो इसे दिनकर के नाम से प्रचारित करते है। पूरा नाम लिखकर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर। हद तो यह है कि एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स) भी इस सतही कविता को दिनकर के नाम से ही बता रहा है। अब भाजपा आरएसएस का प्रचार तंत्र यह तो नहीं बताएगा कि दिनकर की असली कविता तो यह है गांधी का पी रुधिर जवाहर पर फुंफकार रहे हैं! देखिए कितनी दूर तक देखा था दिनकर ने। 1962 में लिखा था। 60 साल से ज्यादा हो गए अभी भी जवाहर ही मुख्य निशाने पर है। जवाहरलाल नेहरू। कितने सही शब्द का इस्तेमाल किया था फुंफकार रहे है। फुंफकारना क्या होता है? बिना कारण लगातार जहर फेंकना। तो दिनकर की असली कविता यह है। मगर उनके नाम को यूज करना है। उसके जरिए अपने प्रतिक्रियावादी सिर्फ विरोध करने वाले विचारों को स्थापित करना है तो नए साल का विरोध उनके नाम से किया जा रहा है। नया साल मतलब साल की शुरूआत। यानि उम्मीदों की भी। और उम्मीद तोड़ना ही यथास्थितिवाद फैलाना ही इनका मूल उद्देश्य है। बीते साल की नाकामयाबियों पर लिखने को बहुत कुछ है। क्या क्या लिखें? अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि खराब हुई है। अभी जाते हुए साल में न्यूयार्क टाइम्स ने पेज वन पर आरएसएस का कच्चा चिट्ठा खोल दिया है। यहां आरएसएस कहती है हमें इस नजरिए से मत देखो उस नजरिए से मत देखो, आप हमें जानते नहीं हो उधर न्यूयार्क टाइम्स ने लाठियां लिए आरएसएस के स्वयंसेवकों की बड़ी सी तस्वीर और प्रधानमंत्री मोदी का फोटो छापकर लिख दिया कि आरएसएस भारत को लोकतंत्र के उजाले से दूर करके अंधेरे की तरफ ले जा रहा है। भारत की संवैधानिक संस्थाएं जो भारत की मजबूती का आधार था उन्हें ध्वस्त कर दिया गया है। सर्वधर्म समभाव या भारत की जो धर्मनिरपेक्ष छवि थी उसे गहरा आघात लगा है। इससे पहले बीबीसी आरएसएस पर डाक्यूमेंट्री बना चुका है। जिसे भारत में प्रतिबंधित कर दिया गया और बीबीसी के दफ्तरों पर छापे मारे गए। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक तरफ यह हाल है दूसरी तरफ अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप भारतीयों को हथकड़ी बेड़ी पहनाकर भारत भेजने के साथ मुखरों में नहीं वास्तव में पचास बार से ज्यादा यह कह चुके हैं कि व्यापार की धमकी देकर मैंने भारत पाकिस्तान के बीच सीजफायर करवाया। और इतना ही नहीं 8 लड़ाकू विमान गिरे वाली बात वे इस तरह कहते हैं जैसे भारत के गिरे हों। पाकिस्तान की तारीफ करते हैं। वहां के आर्मी चीफ मुनीर जो पहलगाम के आतंकवादी हमले के जिम्मेदार है उन्हें लंच पर बुलाते है। मतलब गुजरे साल मई में हुए आपरेशन सिंदूर के बाद से अब तक उन्होंने कोई मौका नहीं छोड़ा जब भारत का अपमान नहीं किया हो। मगर आश्चर्य है कि एक बार भी हमारे प्रधानमंत्री मोदी ने उनका प्रतिकार नहीं किया। क्या डर है? भारत इतना डरा हुआ तो कभी नहीं था। एक प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी भी थीं जो आंख में आंख डालकर अमेरिका के राष्ट्रपति से बात करती थीं। सैनिक शक्ति का रौब दिखाने पर कहती थीं कि सातवां बेड़ा नहीं आठवां भी भेज दो। भारत नहीं डरेगा। और इधर देश में क्या हुआ? साढ़े 11 साल की नफरत और विभाजन की आग अब सब जगह पहुंच गई है। दलित, पिछड़े, आदिवासी, मुस्लिम, महिला तो छोड़ दीजिए जिनसे यह कहते थे कि हम तुम्हारे लिए ही काम कर रहे है उन ब्राह्मण और राजपूतों के बीच भी नफरत और वैमनस्य पैदा कर दिया। यूपी में भाजपा के ब्राह्मण विधायकों को बैठक करने पर पार्टी की तरफ से चेतावनी दी जा रही है। जबकि इससे पहले राजपूत विधायक बैठक कर चुके थे। मतलब इनके नफरत के जहर से कोई नहीं बचा है। महिला के बारे में हाल यह है कि उसकी सुरक्षा तो छोड़ दीजिए आज ऐसी स्थिति ले आए हैं कि लोग बलात्कार का समर्थन करने लगे। निर्भया के समय कोई सोच सकता था? उसी समय उठा कर अंदर कर दिया जाता।

सर्वनाश की ओर ले जाता तूफान

-डा. विनोद बब्बर-

वर्तमान समय युवा युग कहलाता है। भारत को विशेष रूप से युवा भारत के नाम से संबोधित किया जा रहा है क्योंकि हमारी जनसंख्या का सबसे बड़ा भाग युवा है और तेजी से बदलती तस्वीर में युवा शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। उच्च शिक्षा, व्यवसाय से राजनीति तक, देश से विदेश तक हमारे युवाओं की धूम है तो ऐसे में हमारे मन का प्रफुल्लित होना स्वाभाविक है लेकिन इस सुखद परिवर्तन के साथ हो रहे अन्य परिवर्तनों को भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। साथ-ही-साथ हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि इस स्थिति के लिए कहीं-न-कहीं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार न दे पाने के हम स्वयं भी दोषी हैं। यह सर्वविदित ही है कि युवाओं का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जिनकी सोच, संस्कृति, जीवनशैली एवं मनोरंजन के सारे मापन बदल गए हैं। बेशक अत्याधुनिक कहे जाने वाले सभी युवाओं के जीवन में ऐसा नकारात्मक परिवर्तन न आया हो लेकिन इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि भटकाव के कई नये द्वार खुल गए हैं। फैशनपरस्ती और ड्रग्स उनके जीवन का आधार बन गए हैं। इन्हें किसी से कोई मतलब नहीं है, केवल अपना मनोरंजन करना या मनमानी करना, इनकी नियति बन गई है। माता-पिता से इनका नाता सिर्फ लेने तक ही सीमित हो रहा है, उनके प्रति कोई दायित्व बोध नहीं । परिवार से ही नहीं, समाज और राष्ट्र के बारे में जानने की इच्छा भी औपचारिकता भर है। इनकी दिलचस्पी किसी न जाने किस दूसरे लोक में है। सकारात्मक सोच से बहुत दूर ये युवा वर्तमान युग की कई खोखली चीजों से प्रभावित हैं। अपने कर्तव्यों और कार्यक्षेत्रों से विमुख ये युवा पता नहीं कौन-सी नई राह बनाने में लगे हैं।

आज के युवाओं को प्रभावित करने वाली चीजों में से मुख्य हैं- इंटरनेट, अश्लील एवं फूहड़ फिल्में, पब संस्कृति, ड्रग्स, फैशन, महंगे मोबाइल, जिनमें एसएमएस एवं एमएमएस करना, महंगी गाड़ियां एवं न सकने लिए मोटी रकम। ये चीजें ऐसी हैं, जो युवाओं में रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच के बजाय, घातक सोच को अंजाम दे रही है, परंतु हमारे युवा इस घातक सोच को ही आधुनिक युग की प्रतिष्ठा एवं सम्मान का स्वरूप देने में जुट गए हैं। इस सर्वेक्षण में जो तथ्य सामने आये हैं, उससे कष्ट तो होना स्वाभाविक है परंतु सच्चाई चाहे कितनी भी अप्रिय क्यों न हो उसे नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता है। यदि हम इस ओर से आँखें मूंदते हैं तो इसका अर्थ होगा कि हम भी इस संकट को हल्के से ले रहे हैं।

इस तथ्य से कौन इंकार करेगा कि इंटरनेट का मायाजाल आज का सर्वाधिक आकर्षित करने वाला एक सशक्त माध्यम है। सर्वेक्षण से पता चलता है कि युवा इंटरनेट से सूचना एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री से अधिक कुछ ऐसी बातें खोजते हैं जो उनके नैतिक पतन का रास्ता तैयार करती है। जैसे वेब पोर्टलों पर सेक्स से जुड़ी कई साइट्स हैं, जो सहज ही आकर्षित कर लेती है। भारत के उच्च शिक्षण संस्थान जैसे दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, बंगलौर, खड़गपुर, अहमदाबाद आदि बड़े महानगरों में स्थित आई.आई.टी., मेडिकल एवं आई.आई.एम. के युवाओं से पूछे जाने पर यह बात सामने आई कि इन संस्थानों में अधिकतर युवाओं एवं युवतियों के लिए सेक्स एक सामान्य बात है। विवाह से पूर्व ही इन्हें वैवाहिक जीवन की सामान्य गतिविधियों की अच्छी-भली जानकारी एवं अनुभव प्राप्त है। पाँच से सात प्रतिशत युवा, जो इस राह को नापसंद करते हैं, उन्हें विशिष्ट विशेषणों से नवाजा जाता है।

महंगे उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य है चरित्र, शील एवं सभी मर्यादाओं को ताक पर रख देना। किसी भी देश की धड़कन कहे जाने वाले तथा राष्ट्र को अपने मजबूत कंधों पर ढोकर ले जाने वाले युवाओं के एक वर्ग ने अश्लीलता की सारी हदें पार कर ली हैं कि न तो उनके जीवन की धड़कन ही सही ढंग से धड़क पा रही है और न वे स्वयं अपने जर्जर शरीर को लड़खड़ाते कदमों से झेल पा रहे हैं। जब ये स्वयं को नहीं संभाल पा रहे हैं तो समाज एवं राष्ट्र के भार को क्या वहन कर पाएंगे। अश्लीलता की आग में झुलस रहे युवाओं को ड्रग्स एवं नशा खूब लुभा रहे हैं। छोटी उम्र में ही नशे और कामुकता के प्रति बढ़ता आकर्षण शहर से गांव तक, विश्वविद्यालय से स्कूल स्तर तक, कुछ भी न करने वाले आवारा बच्चों में विशेष रूप से बढ़ रहा है। दुर्भाग्य की बात है कि इस आत्मघाती प्रवृत्ति को क्षमता बढ़ने का नाम दिया जा रहा है। इनके लिए क्षमता का अर्थ नए ड्रग्स का अधिकतम उपभोग है। दुर्भाग्य से युवाओं में ही नहीं, पूरे समाज में होने वाली पार्टियों में शराब सहित अनेक प्रकार के ड्रग्स का

प्रचलन बढ़ा है। इधर हुक्का पब के नाम पर भी बहुत कुछ चल रहा है। नव वर्ष की पूर्व संध्या पर देश के विभिन्न भागों में हुड़दंग देखने सुनने को मिलते हैं जहाँ बहुत बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों का उपयोग किया जाता है। एक ओर समाज कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति से परेशान है तो दूसरी ओर राजधानी सहित देश के विभिन्न भागों में शराब की दुकानों की संख्या बढ़ी है। दूध और घी की दुकान पर बेशक एक भी व्यक्ति न हो लेकिन शराब की हर दुकान के बाहर लंबी-लंबी लाइन देखने को मिलती है। आखिर इसका क्या अर्थ हो सकता है? आखिर किस ओर जा रहे हैं? क्या नशे की यह सुनामी हमें सर्वनाश की ओर ले जा रही है ?

पिछले दिनों संसद के केंद्रीय कक्ष में एक सांसद का ई सिगरेट का उपयोग करते हुए वीडियो वायरल हुआ जबकि भारत में ई सिगरेट के व्यापार बिक्री पर प्रतिबंध है। इस गंभीर मामले की शिकायत लोकसभा को अध्यक्ष को की गई परंतु अब तक कोई कार्रवाई न होने से देश में गलत संकेत जाता है। दुर्भाग्य की बात यह है कि उस दल के नेतृत्व में भी अब तक उस सांसद के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की। क्या यह मान लिया जाए कि कानून और लोक लाज की दृष्टि में प्रतिबंध नशे के उपयोग को गलत मानना छोड़ दिया जाए।

एशिया में आज सिंथेटिक रसायन और मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले एंफेटामाइन्स की खूब मांग है। अनेक प्रकार के मादक पदार्थों की सूची में लिकर चॉकलेट भी शामिल हो गई है जो युवाओं के हारमोंस को बदल उनके भविष्य को नष्ट करने का एक बड़ा कारण बन रही है। सीमा पार से आने वाले नशे का सामान पंजाब सहित अनेक राज्यों को बर्बाद कर रहा है । ओआरजी नेट पर ड्रग डाटाबेस को खंगालते एक 15 वर्षीय लड़के मनीष से पूछने पर पता चलता है कि मादक पदार्थों का नुस्खा तैयार करने में महारत हासिल करना चाहता है और देसी एलएसडी का जादुई काढ़ा तैयार करके अपना चमकीला कैरियर बनाना चाहता है। इस किशोर को पता नहीं कि वह मादक पदार्थों के तस्करों के लिए आसान माध्यम बनने जा रहा है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार एम्स में नेशनल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर में प्रतिवर्ष 50 हजार से अधिक नशेड़ी पहुँचते हैं। इनमें से आधे से अधिक की सामुदायिक देख-भाल की जाती है। इससे पता चलता है कि अफीम के उत्पादों का प्रयः सिंथेटिक मादक पदार्थों का इस्तेमाल करने वालों की संख्या इससे भी कम समय में तेजी से बढ़ी हुई पाई गई और उपचार कराने वालों में से इनके व्यसनियों की संख्या 15 फीसदी बढ़ी हुई मिली।

नेशनल सेंटर फॉर ड्रग यूज प्रिवेंशन के उपनिदेशक सुरेश कुमार का कहना है कि पेनकिलर, सिडेटिव, एंक्जियोलाइटिक्स, हिप्नोटिक जैसी दवाओं के साथ ही अफीम से बनी सिंथेटिक दवाओं का दुरुपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इस संदर्भ में 2008 में आर.एस.आर.ए. के तहत दक्षिण एशिया के देशों में 21 से 30 साल के 9465 लोगों को सर्वेक्षण किया गया था. इससे पता चला कि भारत में 5800 उत्तरदाताओं में से 43 फीसदी से अधिक दर्दनिवारक दवा की सुई लगवाते हैं।

नशीली दवाएं लेना एक ऐसी आदत है जो बन जाने के बाद छोड़नी असंभव हो जाती है। हर व्यक्ति एक ही चीज पसंद नहीं करता है, कोई एक पसंद करता है तो कोई दूसरी। केटामाइन चेतना लुप्त करने वाला ड्रग है जिसे 'डेट रेप' ड्रग्स भी कहते हैं। यह नींद की दवा वेलियम से दस से बीस गुना प्रभावशाली है। कई बार इन औषधियों को कामुकता बढ़ाने के लिए लिया जाता है। इसका असर खत्म होते ही भारी झटका लग सकता है, अधिक सेवन से मौत भी हो सकती है। आइस, जिसे क्रैंक, ग्लास या क्रिस्टल मेथ के नाम से जाना जाता है, यह भारी नशा देता है तथा हिंसक बना देता है। आज के युवा गांजा, भांग, अफीम को छोड़कर इन सिंथेटिक नशाओं के दीवाने बनते जा रहे हैं। विशेषज्ञों के मतानुसार नशे के इंजेक्शनों का प्रचलन बढ़ रहा है जो अपेक्षाकृत सस्ते लेकिन बहुत खतरनाक है ।

बंगलौर स्थित विमहान्स में डिएडिक्शन सेंटर की प्रमुख के मतानुसार शहरों में ड्रग्स के साथ खतरनाक प्रयोग आम बात हो गई है। अधिकतर युवा पेशवर साथियों के दबाव, उबाऊ जिंदगी, तनाव एवं आवश्यकता से अधिक आय की वजह से मादक पदार्थों का सेवन शुरू कर देते हैं। केवल व्यवसाय ही नहीं, छोटे-छोटे काम धंधे करने वाले मजदूरों करने वाले भी नशे के आदी अधिकतर लोग 20 से 40 वर्ष की उम्र के हैं, जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं। पिछले दशक में मादक पदार्थ सेवन शुरू करने की उम्र 20 वर्ष थी, वहीं आज घटकर 15 हो गई है।

इन ड्रग्स का चलन यहाँ तक है कि अब तो स्कूली बच्चे भी कई तरह के ड्रग्स का एक साथ प्रयोग कर रहे हैं। नशा विरोधी एक स्वयंसेवी संगठन द्वारा स्कूली बच्चों के सर्वेक्षण- अध्ययन के नतीजे संकेत करते हैं कि अब लड़के ही नहीं, लड़कियां भी नियमित रूप से मादक पदार्थों का इस्तेमाल करती हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों में सिगरेट और शराब का प्रचलन बढ़ा है। देश की राजधानी दिल्ली के एक बहुचर्चित संस्थान में सिगरेट पीती हुई हमारे ही परिवारों की बेटियों को देखा जा सकता है। आज युवक की पार्टी का स्वरूप बदला है। मदमस्त करने वाली लाइट, धुआं, ड्रग्स अड्डस फग और कान फोड़ने वाले टेक्नो संगीत की धुन पर नाचते सैकड़ों युवक किसी डांस पार्टी में नहीं, बल्कि आधुनिक रेव पार्टी में होते हैं। इस पार्टी में शराब नहीं बंटती है, परंतु इससे स्थान पर ऐसी चीजें बंटती हैं, जिन्हें दूसरे नाम दिए गए हैं, पर ये सभी तरह-तरह के नशे हैं। इन सभी को आज कोकीन और अफीम के उत्पादों से भी अधिक इस्तेमाल किया जाता है। इन दिनों बरसों पुराना हुक्का आधुनिक रूप धरकर सामने आया है। बड़े-बड़े शॉपिंग माल्स के अलावा अलग से ऐसे रेस्टोरेंट खुल गए हैं, जो सरेआम धुएं में डूबते युवाओं को विशेष स्थान मुहैया करा रहे हैं। लड़कियां भी बड़ी संख्या में इसकी शिकार हो रही हैं। जीवन में यौवन एक ऊर्जा का आगार है। इस ऊर्जा को नशा, वासना एवं आधुनिक खुली संस्कृति में गंवाना नहीं चाहिए। युवा ऊर्जा एवं शक्ति के प्रतीक हैं, उन्हें इनका उपयोग मनमाने ढंग से करने की छूट नहीं मिल सकती है। इसका नियोजन सदैव रचनात्मकता में, सृजनात्मकता में, पीड़ित मानवता की सेवा में, गरीबी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि के खिलाफ करना चाहिए। बहनों के साथ सरेआम छेड़छाड़ अथवा दुर्व्यवहार को कायर बने तमाशा देखने वाले युवाओं में लगता है साहस और संघर्ष करने का जज्बा लुप्त हो रहा है। आज भी युवा एकजुट होकर समाज के दुश्मन इन अपराधियों से मुक्ति का संकल्प ले ले तो ये अधिक समय तक टिक नहीं पाएंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि नशे के अधम व्यापारियों ने हमारे युवाओं के साथ-साथ पूरी व्यवस्था को को अपने हाथों के खिलौने बना लिया है। जिन्हें नशा -उन्मूलन में लगना चाहिए, क्या वे स्वयं भी नशे में हैं?

नये साल, नया कदम, नयी चुनौती

-डॉ. योगेन्द्र-

यात्रा कल भी थी, आज भी है। समय नया पुराना नहीं होता, महसूसना नया पुराना होता है। कल काले पर केंचुल था, आज उतर गया है। सब-कुछ ताजा लग रहा है। नये सपने, नयी ख्वाहिशें। वैसे समय यात्रा पर अनवरत चल रहा है। वह खंडित नहीं है, लेकिन हम सब उसे खंड खंड कर देखते हैं। हम काल के साथ जितनी दूरी तय करते हैं, वह समय का एक खंड ही है। हम समय को खंडित कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। यही वजह है कि हमारा ज्ञान खंडित होता है। अखंड ज्ञान के लिए अखंड काल का अनुभव करना होगा, जो संभव नहीं होता। खंडित ज्ञान हमें अपने पूर्वाग्रहों से भर देता है। यह पूर्वाग्रह हमें अहंकारी बनाता है। ज्ञान के मंथन से पूर्वाग्रहों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं। जो भी हो। 2026 की काल -यात्रा करुण हो। विवेकी हो। सत्य और न्याय पर आधारित हो। कल साल का अंतिम दिन था। साथियों के साथ 'क्या खोया, क्या पाया' विषय पर संवाद हुआ। बादल से लुका छिपी करता सूरज और जमीन पर हम सब संवाद करते हुए। हम सबने महसूस किया कि अभिव्यक्ति खतरे में है। गर्दन पर तलवार लटकी है। सत्य न बोल सकते हो, न सुन सकते हो। असत्य का प्रचार करने मीडिया भोंपू बनी बैठी है। हवा में भी जासूसी है। पूरी दुनिया में बहुसंख्यकवाद हावी है। बहुसंख्यकवाद भी ऐसा कि उसे अल्पसंख्यक से खतरा महसूस होता है। बांग्लादेश हो या पाकिस्तान हो, श्रीलंका हो या भारत हो, जर्मनी हो या नाइजीरिया हो। बहुसंख्यकवाद किसी की गर्दन रेत दे या जिंदा जला दे, हम अपने धर्म की दुहाई देकर प्रसन्न होंगे। लोकतंत्र की तो हवा निकल रही है। सरकार को सभी शक्तियां

चाहिए। उसके बिना पत्ते भी न हिलें।

आदमी के पास तन है और मन है। तन की सुविधा के लिए बहुत सारी चीजों का आविष्कार किया। तन आरामतलबी हो गया। अब मन के लिए आविष्कार हो रहा है। हम एआई तक आ गये हैं। कविता, कहानी, प्रोजेक्ट-सब-कुछ वे बनायेंगे। तन सुविधा तलाश करते करते बीमार रहने लगा है। अब मन की बारी है। हम लोग पैदा करते हैं। फिर इलाज ढूंढते हैं। रुग्ण मन और तन कैसी दुनिया बनायेगा? कल बोलते बोलते एक छात्र ने कहा। घर का कुआं गया, फिर चापानल गया और बोतल का पानी पीकर शान बघार रहे हैं कि हमारा विकास हुआ है। दरअसल हम सबका बैटरी डाउन हो गया है। मुझे अब लगता है कि मार्क्सवाद की चमक फीकी हुई है। गांधीवाद, अम्बेडकरवाद या लोहियावाद के सपनों पर भी पानी फिर गया है। अब एक नयी विचारधारा चाहिए, जो समय की जटिलताओं को समझ सके और लोगों की चेतना को प्रभावित कर सके। बहुसंख्यकवाद दक्षिणपंथियों के लिए सुगम रास्ता है सत्ता तक पहुंचने का। शेष समस्याएं यों ही मुंह बायें खड़ी रहती हैं। वे यों ही संविधान पर हमला नहीं कर रहे और उनके लोग मनुस्मृति और शरीयत को अतिरिक्त तरजीह दे रहे हैं। दक्षिणपंथ का एक नया रूप सामने है। वह भूमंडलीकरण का भी तार बन बैठा है। खैर, कल शाम को अचानक आसमान एकदम साफ हो गया था। न कुहरा, न बादल। उस वक्त तक सूर्य अस्ताचलगामी हो रहे थे। ठंड तो थी ही। सुबह जब जगा तो घना कुहरा छाया था। टहलने निकला तो दो बांस दूर कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। सड़कें भींगी - भींगी सी थीं। जब बगीचे से होकर गुजरा तो आम के पत्तों से टप- टप बूंदें गिर रही थीं। आम से बिछुड़े पत्ते भींग गये थे। बगीचे के मध्य से गुजरते हुए अवर्णनीय सुख का अनुभव हो रहा था। प्रकृति निस्संदेह जीवन के लिए सभी चीजें मुहैया करती है। ये मनुष्य को सौंदर्य से भर देती हैं। हमें नये वर्ष में प्रकृति को केंद्र में रखकर एक नयी वैचारिक संरचना गढ़ सकते हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने वन्दना ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, साय पॉकेटबना एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/570, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2010/...)

एसयूवी की मांग से 2025 में चमका भारत का ऑटो उद्योग, ऑडी, रेनो समेत इन कंपनियों ने दर्ज की रिकॉर्ड बिक्री

नई दिल्ली, भारत का ऑटोमोबाइल उद्योग साल 2025 के अंत में मजबूत स्थिति में रहा और 2026 की शुरुआत आत्मविश्वास के साथ की, जिसमें कई दिग्गज कंपनियों ने अच्छी बिक्री और तेजी दर्ज की।

साल 2025 में बाजार की स्थितियां बदलती रहीं, लेकिन साल की दूसरी छमाही में ग्राहकों की मांग बढ़ी।

इसकी वजह नई गाड़ियों की लॉन्चिंग, त्योहारी सीजन में खरीदारी और लोगों का बढ़ता भरोसा रहा।

लग्जरी कार कंपनी ऑडी इंडिया ने 2025 में 4,510 गाड़ियों की खुदरा बिक्री की। एसयूवी, तेज रफ्तार वाली कारों और महंगी गाड़ियों की लगातार मांग से कंपनी को फायदा हुआ।

ऑडी क्यू7, क्यू8, आरएस क्यू8 परफॉर्मेंस और एस5 स्पोर्टबैक जैसी गाड़ियों को ग्राहकों ने काफी पसंद किया। वहीं, ऑडी क्यू3, ए4, ए6 और क्यू5 जैसे मॉडल भी लगातार बिकते रहे।

कंपनी ने बताया कि जीएसटी में सुधार और त्योहारों के दौरान

अच्छी बिक्री से ग्राहकों का उत्साह बढ़ा।

आगे की योजना के बारे में ऑडी इंडिया ने कहा कि वह 2026 में नई गाड़ियां लॉन्च करने, ग्राहकों से बेहतर जुड़ाव और लोगों पर ध्यान देने वाली योजनाओं पर काम करेगी।

रेनॉल्ट इंडिया ने भी 2025 की दूसरी छमाही में शानदार वापसी की, जिसमें कंपनी की बिक्री में सालाना आधार पर 18.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। तीसरी तिमाही से बिक्री में तेजी आई और चौथी तिमाही में यह बढ़त 27 प्रतिशत से ज्यादा हो गई।

दिसंबर 2025 रेनॉल्ट के लिए सबसे अच्छे महीनों में से एक रहा, जब बिक्री 33.4 प्रतिशत बढ़कर 3,845 यूनिट तक पहुंच गई।

वहीं, स्कोडा ऑटो इंडिया के लिए 2025 अब तक का सबसे सफल साल रहा। इसी साल कंपनी ने भारत में अपने 25 साल पूरे किए।

स्कोडा ने 72,665 गाड़ियों की बिक्री की, जो 2024 की तुलना में दोगुनी से भी ज्यादा है और इसमें 107 प्रतिशत की जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की गई।

किआ इंडिया ने 2025 में कुल 2,80,286 गाड़ियों की थोक बिक्री की, जो पिछले साल की तुलना में 15 प्रतिशत ज्यादा है।

दिसंबर 2025 किआ के लिए अब तक का सबसे अच्छा महीना रहा, जिसमें बिक्री 105 प्रतिशत बढ़कर 18,659 यूनिट हो गई।

किआ सोनेट ने लगातार दूसरे साल 1 लाख यूनिट बिक्री का आंकड़ा पार किया, जिससे कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में इसकी मजबूत पकड़ दिखी। किआ ने साल के अंत तक भारत के 369 शहरों में 821 टचपॉइंट्स के साथ अपनी मौजूदगी भी बढ़ाई।

महिंद्रा एंड महिंद्रा ने दिसंबर 2025 में एसयूवी और हल्के कमर्शियल वाहनों की अब तक की सबसे ज्यादा बिक्री दर्ज की।

कंपनी ने घरेलू बाजार में 50,946 एसयूवी बेचीं, जो 23 प्रतिशत की बढ़त है, जबकि निर्यात सहित कुल वाहन बिक्री 86,090 यूनिट रही, जो पिछले साल की तुलना में 25 प्रतिशत ज्यादा है।

कमर्शियल वाहनों की बिक्री में भी अच्छी बढ़त देखने को मिली, खासकर हल्के कमर्शियल वाहन (एलसीवी) की मांग बनी रही। महिंद्रा ने कहा कि 2025 का मजबूत समापन ग्राहकों के बढ़ते भरोसे और उसकी एसयूवी पर आधारित रणनीति की सफलता को दर्शाता है।

वाणिज्यिक रसोई गैस सिलेंडर सात प्रतिशत महंगा

नई दिल्ली, तेल विपणन कंपनियों ने नये साल पर वाणिज्यिक रसोई गैस सिलेंडर की कीमतों में करीब सात प्रतिशत की भारी-भरकम बढ़ोतरी की है जबकि घरेलू सिलेंडर के दाम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन की वेबसाइट के अनुसार, दिल्ली में गुरुवार से 19 किलोग्राम वाला वाणिज्यिक रसोई गैस सिलेंडर 1,691.50 रुपये का हो गया है। यह जून 2025 के बाद का सबसे ऊंचा स्तर है। दिसंबर में इसकी कीमत 1580.50 रुपये थी। इस प्रकार इसकी कीमत 111 रुपये (7.02 प्रतिशत) बढ़ी है। इससे पहले दिसंबर में यह 10 रुपये और नवंबर में पांच रुपये सस्ता हुआ था। देश के अन्य मेट्रो शहरों में भी कीमतों में लगभग इतनी ही बढ़ोतरी की गयी है। कोलकाता और मुंबई में इसके दाम 111 रुपये बढ़े हैं। अब कोलकाता में नई कीमत 1,795 रुपये और मुंबई में 1,642.50 रुपये हो गयी है। चेन्नई में वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर 110 रुपये महंगा होकर आज से 1,849.50 रुपये का मिलेगा। वहीं, 14.2 किलोग्राम वाले घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 08 अप्रैल 2025 के बाद से कोई बदलाव नहीं किया गया है। दिल्ली में इसकी कीमत 853 रुपये, कोलकाता में 879 रुपये, मुंबई में 852.50 रुपये और चेन्नई में 868.50 रुपये पर स्थिर है। तेल विपणन कंपनियां रसोई गैस की कीमतों की हर महीने समीक्षा करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कीमतों में बदलाव और डॉलर की तुलना में रुपये की विनिमय दर के आधार पर आम तौर पर हर महीने की पहली तारीख से नई कीमतें तय की जाती हैं।

नए साल 2026 की सकारात्मक शुरुआत, बढ़त के साथ खुले शेयर बाजार

मुंबई, नए साल 2026 के पहले कारोबारी दिन गुरुवार 1 जनवरी 2026 को भारतीय शेयर बाजार ने सकारात्मक शुरुआत की। वैश्विक बाजारों से कमजोर संकेत मिलने के बावजूद नए साल के मौके पर निवेशकों की खरीदारी के चलते घरेलू बाजार हरे निशान में खुले। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स मामूली बढ़त के साथ 85,255 अंक पर खुला। शुरुआती कारोबार में इसमें और मजबूती देखने को मिली। सुबह शुरुआत के बाद सेंसेक्स 185.77 अंक की बढ़त के साथ 85,406.37 अंक पर कारोबार कर रहा था। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी हल्की तेजी के साथ 26,173 अंक पर खुला और सुबह 9:42 बजे यह 44.85 अंक की बढ़त के साथ 26,174.45 के स्तर पर पहुंच गया। वहीं एशिया के अधिकांश प्रमुख शेयर बाजार नए साल के अवसर पर गुरुवार को बंद रहे। वहीं अमेरिकी शेयर बाजार वॉल स्ट्रीट पर पिछले कारोबारी सत्र में दबाव देखने को मिला। प्रमुख बेंचमार्क इंडेक्स एसएंडपी 500 और नैस्डैक क्रमशः 0.74 प्रतिशत और 0.76 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुए। हालांकि, गिरावट के बावजूद इन दोनों इंडेक्स ने लगातार तीसरे साल दोहरे अंकों की वार्षिक बढ़त दर्ज की, जो 2021 के बाद उनकी सबसे लंबी तेजी की श्रृंखला है। साल 2025 का आखिरी कारोबारी दिन भारतीय शेयर बाजार के लिए मजबूत और सकारात्मक रहा। उतार-चढ़ाव भरे साल के बावजूद बाजार ने हरे निशान के साथ विदाई ली। निफ्टी ने लगातार 10वें साल वार्षिक बढ़त दर्ज कर नया रिकॉर्ड बनाया, जबकि सेंसेक्स ने भी अपनी मजबूती बरकरार रखी। पूरे साल 2025 में सेंसेक्स 7,081.59 अंक यानी करीब 9 प्रतिशत चढ़ा, जबकि निफ्टी में 2,484.8 अंक की बढ़त दर्ज की गई।

दिसंबर में जीएसटी संग्रह सालाना आधार पर 6.1 प्रतिशत बढ़कर 1.74 लाख करोड़ रुपए रहा

नई दिल्ली, वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह दिसंबर 2025 में सालाना आधार पर 6.1 प्रतिशत बढ़कर 1,74,500 करोड़ रुपए हो गया है। यह पिछले साल समान अवधि में 1,64,556 करोड़ रुपए था। यह जानकारी सरकार की ओर से गुरुवार को दी गई।

दिसंबर 2025 में सेंट्रल जीएसटी संग्रह बढ़कर 34,289 करोड़ रुपए, स्टेट जीएसटी संग्रह 41,368 करोड़ रुपए, आईजीएसटी संग्रह बढ़कर 98,894 करोड़ रुपए हो गया है।

इसके अलावा सरकार ने दिसंबर में 28,980 करोड़ रुपए का जीएसटी रिफंड जारी किया गया है। इसमें सालाना आधार पर 31 प्रतिशत की बढ़त देखने को मिली है। इससे नेट जीएसटी संग्रह 1.45 लाख करोड़ रुपए हो जाता है।

सरकार ने जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर के माध्यम से 4,551 करोड़ रुपए जुटाए, जो संपूर्ण ऋण और ब्याज देयता के निपटान तक एक अस्थायी व्यवस्था के रूप में जारी है। पूरे वर्ष का संग्रह 88,385 करोड़ रुपए रहा, जबकि 2024 में यह 1.1 लाख करोड़ रुपए था।

जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर, जो शुरू में जून 2022 तक पांच वर्षों के लिए था, राज्यों को क्षतिपूर्ति के लिए उपयोग किए गए केंद्र सरकार के कोविड-काल के ऋणों की चुकौती के लिए मार्च 2026 तक बढ़ा दिया गया था।

नए जीएसटी ढांचे में क्षतिपूर्ति उपकर को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। लग्जरी वस्तुओं पर 40 प्रतिशत का टैक्स लगाया गया है।

वित्त वर्ष 2025 की अप्रैल-दिसंबर अवधि में जीएसटी संग्रह सालाना आधार पर 8.6 प्रतिशत बढ़कर 16.5 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच गया है, जो कि पिछले साल समान अवधि में 15.19 लाख करोड़ रुपए पर था।

इससे पहले नवंबर में जीएसटी संग्रह 1,70,276 करोड़ रुपए पर रहा था। इसमें सालाना आधार पर 0.7 प्रतिशत की बढ़त देखी गई है। पिछले साल समान अवधि में यह 1,69,016 करोड़ रुपए था। वहीं, त्योहारी बिक्री के कारण अक्टूबर में जीएसटी संग्रह 1,95,936 करोड़ रुपए रहा था।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के नये लोगो, शुभंकर का अनावरण

नई दिल्ली, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने नव वर्ष पर अपने नये लोगो, शुभंकर का अनावरण किया। मंत्रालय का कहना है कि यह उसकी संस्थागत पहचान को आधुनिक बनाने, लोक संपर्क बढ़ाने और राष्ट्र निर्माण में आधिकारिक आंकड़ों की भूमिका को सुदृढ़ करने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है। नया लोगो राष्ट्र के विकास में आंकड़ों के महत्व तथा डेटा-आधारित शासन, पारदर्शिता तथा प्रगति को सुगम बनाने की मंत्रालय की प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करता है। मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति में कहा कि भारत की समृद्ध विरासत और आधुनिक सांख्यिकी विज्ञान से प्रेरित यह लोगो मंत्रालय के ÷विकास के लिए डेटा÷ के संदेश को दर्शाता है।लोगो में सत्य, पारदर्शिता और सुशासन का प्रतीक अशोक चक्र और उसके मध्य में रुपये का चिह्न है। इसमें संख्याओं और प्रतीकों का उपयोग आधुनिक डेटा प्रणालियों तथा सांख्यिकी विज्ञान को दर्शाता है।

ऊपर की ओर बढ़ती विकास-रेखा प्रगति को दर्शाती है और बताती है कि विश्वसनीय डेटा सतत आर्थिक विकास की कैसे सहायता करता है। केसरिया, सफेद, हरा और गहरा नीला रंग भारत के राष्ट्रीय मूल्यों ङ्क विकास, सत्य, स्थिरता, स्थायित्व और ज्ञान ङ्क का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो आधिकारिक आंकड़ों के भरोसे और विश्वसनीयता को मजबूत करते हैं। मंत्रालय ने अपना नया शुभंकर, ÷सांख्यिकी÷ प्रस्तुत किया है जो एक बालिका के रूप में एक मैत्रीपूर्ण और लोक-केंद्रित चरित्र है, जिसे देश भर के लोगों के लिये आंकड़ों को सरल, समझने योग्य और आकर्षक बनाने के लिये डिजाइन गया है। यह आंकड़ों की शुद्धता, पारदर्शिता और डेटा-आधारित शासन ङ्क को दर्शाता है जो मंत्रालय के मूल आदर्श हैं। यह इस बात को भी दर्शाता है कि आंकड़ों को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है जो आम जनता के लिए सहज हों।

डिजिटल भुगतान में भारत की बड़ी छलांग, दिसंबर में यूपीआई ट्रांजैक्शन में हुई 29 प्रतिशत की तेज बढ़ोतरी

नई दिल्ली, बीते दिसंबर में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) से होने वाले ट्रांजैक्शन में तेज बढ़ोतरी देखने को मिली। नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) द्वारा गुरुवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, दिसंबर में यूपीआई के जरिए 21.63 अरब ट्रांजैक्शन हुए, जो पिछले साल की तुलना में 29 प्रतिशत ज्यादा हैं। वहीं, ट्रांजैक्शन की कुल राशि भी 20 प्रतिशत बढ़कर 27.97 लाख करोड़ रुपए हो गई।

महीने के हिसाब से भी यूपीआई ट्रांजैक्शन की संख्या और रकम में अच्छी बढ़ोतरी दर्ज की गई। दिसंबर में रोजाना औसतन 90,217 करोड़ रुपए का ट्रांजैक्शन हुआ, जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 87,721 करोड़ रुपए था।

दिसंबर में रोजाना औसतन 698 मिलियन (करीब 69.8 करोड़) यूपीआई ट्रांजैक्शन हुए, जो नवंबर के 682 मिलियन से ज्यादा हैं।

नवंबर महीने में यूपीआई ट्रांजैक्शन की संख्या 20.47 अरब रही थी, जो सालाना आधार पर 32 प्रतिशत की बढ़त थी। उस महीने लेन-देन की कुल राशि 26.32 लाख करोड़ रुपए रही थी, जिसमें 22 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी।

इसी दौरान, इंस्टेंट मनी ट्रांसफर सिस्टम (आईएमपीएस) के जरिए दिसंबर में कुल 6.62 लाख करोड़ रुपए का लेन-देन हुआ। यह पिछले साल की तुलना में 10 प्रतिशत

ज्यादा है और नवंबर के 6.15 लाख करोड़ रुपए से भी अधिक है।

आईएमपीएस के जरिए दिसंबर में 380 मिलियन ट्रांजैक्शन हुए, जबकि नवंबर में यह संख्या 369 मिलियन थी। वहीं रोजाना आईएमपीएस से होने वाला ट्रांजैक्शन 21,269 करोड़ रुपए रहा, जो नवंबर में 20,506 करोड़ रुपए था।

एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत में अब 70.9 करोड़ सक्रिय यूपीआई क्यूआर कोड हैं, जो जुलाई 2024 के बाद से 21 प्रतिशत की बढ़ोतरी दिखाते हैं। किराना दुकानों, मेडिकल स्टोर, बस-अड्डों, रेलवे स्टेशनों और गांवों तक क्यूआर कोड की सुविधा पहुंच जाने से अब स्कैन करके भुगतान करना पूरे देश में आम हो गया है।

रिपोर्ट में बताया गया कि व्यक्ति से दुकानदार (पी2एम) वाले लेन-देन, व्यक्ति से व्यक्ति (पी2पी) लेन-देन से ज्यादा रहे। इसका मतलब है कि लोग रोजमर्रा की खरीदारी में यूपीआई का ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं।

पी2एम ट्रांजैक्शन 35 प्रतिशत बढ़कर अब 37.46 अरब हो गए, जबकि पी2पी ट्रांजैक्शन 29 प्रतिशत बढ़कर 21.65 अरब हो गए। औसतन हर ट्रांजैक्शन की राशि 1,262 रुपए हो गई, जो पहले 1,363 थी। इससे पता चलता है कि लोग अब छोटे-छोटे भुगतानों जैसे यात्रा, खाना, दवा और स्थानीय खरीदारी के लिए यूपीआई का ज्यादा उपयोग कर रहे हैं।

खास बात यह है कि भारत की डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) ने लोगों को आसानी से डिजिटल सेवाओं से जोड़ने में बड़ी भूमिका निभाई है। इससे शहर और गांव के बीच की दूरी कम हुई है और भारत दुनिया में एक मजबूत डिजिटल देश बनकर उभरा है।

तो पिछले साल संन्यास की सोच रहे थे सितसिपास

पर्थ, । ग्रीस के टेनिस स्टार स्टेफानोस सितसिपास पिछले साल चोट के चलते खेल से संन्यास लेने की सोच रहे थे। पीठ की गंभीर चोट के चलते उन्होंने अगस्त में यूएस ओपन के दूसरे दौर में बाहर होने के बाद सिर्फ डेविस कप में दो मुकाबले खेले हैं। अब वह कल से शुरू होने वाले युनाइटेड कप से कोर्ट पर वापसी करेंगे। इसके बाद साल के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में दम दिखाएंगे। उन्होंने गुरुवार को कहा, यूएस ओपन में हार के बाद मैं डर गया था। मैं दो दिन तक चल नहीं पाया। इसके बाद मैं टेनिस को अलविदा कहने के बारे में सोचने लगा। मैं लंबे समय तक कोर्ट से दूर रहा। सत्र के आखिरी तीन या चार टूर्नामेंट में मैं मुश्किल से खेल पा रहा था। इसलिए यह महत्वपूर्ण था कि कुछ ऐसा किया जाए जिससे मैं फिर से ठीक होकर वापस आ सकूं। यह जानते हुए कि मैंने अपना पूरा प्री-सीजन बिना दर्द और किसी परेशानी के पूरा किया है। मुझे उम्मीद है कि यह ऐसा ही रहेगा। मैं युनाइटेड कप से इसकी शुरुआत करूंगा। उम्मीद है कि यह पूरा सत्र ऐसा ही रहेगा। सितसिपास करियर की सर्वश्रेष्ठ नंबर तीन रैंकिंग से खिसकर 36वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

मुझे लगा था फिर कभी नहीं खेल पाऊंगा -सकारिया

बेंगलुरु, जनवरी चेतन सकारिया को तीन साल पहले तक भारत के उभरते हुए तेज गेंदबाजों में से एक गिना जाता था। हालांकि चोटिल होने के कारण लंबे समय तक बाहर रहने के बाद उन्हें लगने लगा था कि वह फिर से कभी नहीं खेल पाएंगे। उन्होंने मौजूदा घरेलू सत्र में सौराष्ट्र की तरफ से विजय हजारे ट्रॉफी में एक मैच खेला। यह फरवरी 2024 के बाद उनका पहला मैच है। उन्होंने कहा, जब मुझे चोट लगी थी तो लगा था कि मैं कभी वापसी नहीं कर पाऊंगा। अब इस घरेलू सत्र में खेलकर बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं। सौराष्ट्र के लिए गेंदबाजी करने के बाद बहुत अच्छा लग रहा है। यह मेरे लिए मानसिक रूप से बहुत चुनौतीपूर्ण था। मुझे विश्वास नहीं था कि मैं दोबारा क्रिकेट खेल पाऊंगा। कुछ डॉक्टरों ने मुझसे कहा कि शायद मैं दोबारा गेंद को ठीक से पकड़ भी न पाऊं। यह मेरे लिए बहुत मुश्किल समय था क्योंकि मैं खुद पर भरोसा नहीं कर पा रहा था। सकारिया को निजी जीवन में भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। वर्ष 2021 में उनके पिता और छोटे भाई की मौत हो गई थी। इस 27 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा कि उस उथल-पुथल भरे दौर ने उन्हें जीवन और करियर में आने वाली असफलताओं से निपटना सिखाया।

डब्ल्यूटीटी यूथ कंटेंडर और फीडर सीरीज आज से

वडोदरा, जनवरी । डब्ल्यूटीटी यूथ कंटेंडर और डब्ल्यूटीटी फीडर सीरीज में 10 देशों के लगभग 334 खिलाड़ी खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। टूर्नामेंट शुक्रवार से वडोदरा के सामा इंडोर खेल परिसर में शुरू होगा। डब्ल्यूटीटी यूथ कंटेंडर का यह दूसरा चरण है। इसमें दो से पांच जनवरी तक अंडर-11 से अंडर-19 आयु वर्ग की प्रतिस्पर्धा होंगी। इसके बाद डब्ल्यूटीटी फीडर सीरीज सात से 11 जनवरी तक होगी। यूथ कंटेंडर में चार देशों के 226 खिलाड़ी भाग लेंगे जबकि फीडर सीरीज में 10 देशों के 108 खिलाड़ी प्रतिस्पर्धा करेंगे। यूथ कंटेंडर की शुरुआत अंडर-13 और अंडर-17 एकल मुकाबलों से होगी। वहीं अंडर-11, अंडर-15 और अंडर-19 वर्ग की स्पर्धाएं चार और पांच जनवरी को खेली जाएंगी। भारत ने पिछले साल डब्ल्यूटीटी यूथ कंटेंडर में शानदार प्रदर्शन किया था। भारतीय टेबल टेनिस महासंघ के महासचिव कमलेश मेहता ने कहा, ओलंपिक और राष्ट्रमंडल खेलों जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट के लिए क्वालिफाई करने के लिए अच्छी रैंकिंग जरूरी होती है।

ब्राज़ील के दिग्गज फुटबॉलर रॉबर्टो कार्लोस को हार्ट की समस्या, अस्पताल में भर्ती

रियो डी जेनेरियो, ब्राज़ील और रियल मैड्रिड के पूर्व स्टार डिफेंडर रॉबर्टो कार्लोस को दिल से जुड़ी समस्या के चलते अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्पेन के प्रतिष्ठित खेल अख़बार डियारियो एएस के अनुसार, 52 वर्षीय कार्लोस को ब्राज़ील में छुट्टियां मनाने के दौरान मेडिकल जांच करानी पड़ी, जिसमें उनके हृदय की कार्यप्रणाली में गड़बड़ी पाई गई।

रिपोर्ट के मुताबिक, रॉबर्टो कार्लोस शुरुआत में पैर में छोटे रक्त के थक्के (ब्लड क्लॉट) की जांच कराने पहुंचे थे। हालांकि, जब पूरे शरीर का एमआरआई किया गया तो डॉक्टरों को पता चला कि उनका दिल ठीक से काम नहीं कर रहा है। इसके बाद उन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती कर सर्जरी की गई, जिसमें हृदय में कैथेटर डाला गया।

यह प्रक्रिया करीब 40 मिनट की होनी थी, लेकिन एक जटिलता के कारण सर्जरी लगभग तीन घंटे तक चली। राहत की बात यह रही कि ऑपरेशन सफल रहा। फिलहाल रॉबर्टो कार्लोस खतरे से बाहर हैं, लेकिन डॉक्टरों की निगरानी में उन्हें अगले 48 घंटे तक अस्पताल में ही रखा जाएगा।

अख़बार के अनुसार, रॉबर्टो कार्लोस से संपर्क करने पर उन्होंने कहा, ÷अब मैं ठीक हूं।÷

रॉबर्टो कार्लोस फुटबॉल इतिहास के सबसे आक्रामक लेफ्ट बैक खिलाड़ियों में गिने जाते हैं।

उन्होंने ब्राज़ील के लिए 125 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले और रियल मैड्रिड के साथ 11 साल तक शानदार करियर बिताया। वह 1998 फीफा वर्ल्ड कप की उपविजेता और 2002 वर्ल्ड कप जीतने वाली ब्राज़ील टीम का हिस्सा रहे। इसके अलावा, उन्होंने 1997 और 1999 में कोपा अमेरिका जीता और रियल मैड्रिड के साथ तीन बार चैंपियंस लीग का खिताब अपने नाम किया।

रॉबर्टो कार्लोस अपने ऐतिहासिक ÷बनाना फ्री किक÷ के लिए भी दुनिया भर में मशहूर हैं। 1997 में फ्रांस के लियोन में हुए एक प्रदर्शनी टूर्नामेंट के दौरान उन्होंने 35 गज दूर से गेंद को अपने बाएं पैर के बाहरी हिस्से से ऐसा मोड़ा कि वह फ्रांस की तीन खिलाड़ियों की दीवार को चकमा देती हुई सीधे गोल में समा गई। यह गोल इतना असाधारण था कि वैज्ञानिकों ने भी इसका विश्लेषण किया।

गेंद पहले पूरी तरह बाहर जाती हुई दिखाई दी, यहां तक कि गोल के पास खड़ा बॉल बॉय भी झुक गया, लेकिन आखिरी पल में गेंद ने अचानक दिशा बदली और नेट में चली गई। फ्रांस के गोलकीपर फैबियन बार्तेज़ हिल तक नहीं पाए। रॉबर्टो कार्लोस ने उस समय दावा किया था कि उन्होंने ऐसा शॉट पहले भी इंटर मिलान के लिए खेलते हुए रोमा के खिलाफ लगाया था, हालांकि 1997 जैसा करिश्मा वह दोबारा नहीं दोहरा सके।

आईसीसी रैंकिंग में दूसरे नंबर पर पहुंचे हैरी और स्टार्क

दुबई, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ताजा रैंकिंग में इंग्लैंड के युवा बल्लेबाज हैरी ब्रूक को लाभ हुआ है। ब्रूक तीन पायदान की छलांग लगाकर दूसरे नंबर पर पहुंच गये हैं। एशेज में मेलबर्न क्रिकेट टेस्ट में खेली शानदार पारी से उसके अंक बढ़े हैं। वहीं ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क भी सीरीज में अच्छी गेंदबाजी के कारण रैंकिंग में 843 अंक लेकर दूसरे नंबर पर पहुंच गये हैं। वहीं भारतीय टीम के जसप्रीत बुमराह 879 अंक लेकर पहले नंबर पर हैं। बल्लेबाजी रैंकिंग की बात करें तो हैरी ने एमसीजी मैदान में विपरीत हालातों में 59 रनों की पारी खेली थी, इस प्रकार उन्होंने अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। इसी कारण वह आईसीसी टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में तीन स्थान ऊपर आये हैं । ब्रूक के अब 846 अंक हो गये हैं। अब उनसे आगे केवल जो रूट हैं। रूट के 867 रेटिंग अंक हैं और वह शीर्ष पर बने हुए हैं। वहीं इंग्लैंड के गेंदबाजों की रैंकिंग भी इस मैच से बेहतर हुई है। तेज गेंदबाज जोशुआ टोंग ने मेलबर्न में कुल सात विकेट लिए थे जिससे वह 13 स्थान ऊप आकर 30वें नंबर पर पहुंच गए हैं जबकि गस एटकिंसन चार स्थान के लाभ के साथ ही 3वें और ब्रायडन कार्स छह स्थान उछलकर 23वें नंबर पर पहुंच गए हैं। दूसरी ओर ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज़ों का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। इससे उनकी रैंकिंग भी गिरी है। केवल मिचेल स्टार्क को ही सीरीज में अच्छी गेंदबाजी करने के कारण लाभ मिला है। अब मार्श पाकिस्तान के स्पिनर नोमान अली के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। अब स्टार्क के पास अंतिम टेस्ट में बेहतर प्रदर्शन कर नंबर एक पर आने का अवसर है। अभी उनके और नंबर एक पर चल रहे जसप्रीत बुमराह के बीच केवल 36 रेटिंग अंक का अंतर बना हुआ है। ऑस्ट्रेलिया के ही युवा गेंदबाज स्कॉट बोलैंड ने एमसीजी में अच्छा प्रदर्शन किया था। इससे वह रैंकिंग में सातवें स्थान पर पहुंच गए हैं। ये गेंदबाज पहली बार 800 रेटिंग अंक से ऊपर पहुंचा है। वहीं विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) रैंकिंग की बात करें तो ऑस्ट्रेलियाई टीम अंक तालिका में 85.71 फीसदी अंक लेकर नंबर एक पर बरकरार है जबकि न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका की टीमें दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।

राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम आंशिक रूप से लागू

नई दिल्ली, राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम गुरुवार को आंशिक रूप से लागू हो गया है। इससे एक सर्व शक्तिशाली राष्ट्रीय खेल बोर्ड (एनएसबी) और खेल विवादों को सुलझाने के लिए एक पंचाट बनाने का रास्ता साफ हो गया है। अधिनियम को पिछले साल 18 अगस्त को अधिसूचित किया गया था। जिन प्रावधानों को लागू किया जा रहा है, वे राष्ट्रीय खेल निकायों की स्थापना और शासन ढांचे से संबंधित हैं, जिनमें राष्ट्रीय ओलंपिक समिति, राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति, राष्ट्रीय खेल महासंघ (एनएसएफ) और क्षेत्रीय खेल संघ शामिल हैं। प्रावधानों के तहत चुनाव होने के बाद सभी निकायों के लिए 15 से अधिक सदस्यों वाली कार्यकारी समितियां बनाना अनिवार्य होगा, जिनमें कम से कम दो खिलाड़ी (एसओएम) शामिल होंगे। एनएसबी में एक अध्यक्ष और ऐसे सदस्य होंगे जिनकी नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा 'योग्यता, ईमानदारी और प्रतिष्ठा वाले व्यक्तियों' में से की जाएगी जिनके पास लोक प्रशासन, खेल प्रशासन, खेल कानून और अन्य संबंधित क्षेत्रों में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव हो। प्रस्तावित तीन सदस्यीय निकाय, एनएसबी के पास न केवल एनएसएफ को संबद्धता देने की शक्ति होगी, बल्कि अधिनियम के पूरी तरह से लागू होने के बाद उनके वित्तीय संचालन की निगरानी करने और किसी भी कदाचार के लिए उन्हें दंडित करने की भी शक्ति होगी। सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिए एनएसएफ के लिए एनएसबी से संबद्धता अनिवार्य होगी। एनएसबी के सभी सदस्यों के लिए आयु सीमा 65 वर्ष निर्धारित की गई है। राष्ट्रीय खेल पंचाट के सदस्य चार साल के लिए पद पर रहेंगे और उनकी आयु सीमा 67 वर्ष होगी। राष्ट्रीय खेल संघों और अन्य खेल निकायों के चुनावों के प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय खेल चुनाव पैनल (एनएसईपी) का गठन भी होगा।

मिशन ओलंपिक-नीरज चोपड़ा के साथ सचिन यादव को भी मिली जगह

-डोप कलंकित पहलवान रीतिका 'टॉप्स' कोर समूह से बाहर

नई दिल्ली, डोप कलंकित पहलवान रीतिका हुड्डा को खेल मंत्रालय की टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) से बाहर कर दिया गया है। दूसरी ओर, कंपाउंड तीरंदाज परनीत कौर और अभिषेक वर्मा को कोर समूह में जगह मिल गई है जबकि डेकाथलीट तेजस्विन शंकर को डेवलपमेंटल सूची में शामिल किया गया है। एशियाई चैंपियनशिप पदक विजेता हुड्डा पिछले साल जुलाई में चयन ट्रायल के दौरान डोप टेस्ट में नाकाम रही थीं। वह पिछले साल फरवरी में जारी टॉप्स कोर समूह का हिस्सा थीं। भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के एक सूत्र ने हुड्डा के बारे में बताया, अब उन्हें बाहर कर दिया गया है।

सिमरन समूह में बरकरार = विश्व पैरा एथलेटिक्स स्वर्ण पदक विजेता फर्राटा धाविका सिमरन को कोर समूह में रखा गया है जिनके गाइड उमर सैफी पिछले साल अक्तूबर में डोप टेस्ट में नाकाम रहे थे। सूत्र ने कहा, वह समूह में है और मिशन ओलंपिक सेल की अगली बैठक में उस पर चर्चा होगी। सिमरन पेरिस पैरालंपिक कांस्य पदक विजेता भी हैं। तीन बार पैरा विश्व चैंपियनशिप में पदक जीत चुकीं 'क्लब थ्रो' खिलाड़ी एकता भयान को भी कोर समूह में जगह मिली है।

तीरंदाजों पर बड़ा दांव = लॉस एंजिलिस ओलंपिक में पदक के प्रबल दावेदार कंपाउंड तीरंदाजों को ताजा सूची में रखा गया है। परनीत, अभिषेक और ज्योति सुरेखा समेत आठ कंपाउंड तीरंदाजों को कोर समूह में जगह मिली है जबकि तीन रिकर्व सितारों दीपिका कुमारी, धीरज बोम्मादेवरा और अंकिता भकत को भी इसमें शामिल किया गया है। अदिति गोपीचंद स्वामी, ओजस प्रवीण देवताले, प्रियांश, प्रथमेश जावकर और ऋषभ यादव के नाम भी सूची में शामिल हैं। एथलेटिक्स में भालाफेंक स्टार नीरज चोपड़ा के साथ सचिन यादव को भी जगह मिली है जो पिछले साल विश्व चैंपियनशिप में चौथे स्थान पर रहे थे। ट्रैक और फील्ड से स्टीपलचेस खिलाड़ी अविनाश साबले, लंबी कूद के खिलाड़ी एम श्रीशंकर और ऊंची कूद के खिलाड़ी सर्वेश कुशारे इसमें शामिल हैं।

डेवलपमेंटल सूची में भी नए नाम = डेवलपमेंटल सूची में फर्राटा धाविक अनिमेष कुजूर (200 मीटर) और एशियाई चैंपियनशिप रजत पदक विजेता तेजस्विन के नाम जोड़े गए हैं। पुरुषों की चार गुणा 400 मीटर रिले टीम (विशाल टीके, जय कुमार, राजेश रमेश, अमोज जैकब, मोहम्मद अजमल वी और संतोष कुमार) को इसमें शामिल किया गया है। उदीयमान टेबल टेनिस खिलाड़ी मानुष शाह, मानव ठक्कर और दिया चितले को भी इस समूह में जगह मिली है।